लेखापरीक्षा ज्ञानोदय

(प्रथम अंक)

हिंदी त्रैमासिक ई-पत्रिका (अप्रैल-जून,2019)

कार्यालय प्रधान निदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा

तथा पदेन सदस्य लेखापरीक्षा बोर्ड-2

सी-25, ऑडिट भवन, 8वाँ तल, बांद्रा कुर्ला कॉम्प्लेक्स

बांद्रा, मुंबई- 400 051 फैक्स- 022 26573814 ई-मेल-

mabmumbai2@cag.gov.in

लेखापरीक्षा ज्ञानोदय परिवार

मुख्य संरक्षक

सुश्री तनुजा मित्तल

प्रधान निदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा

तथा पदेन सदस्य लेखापरीक्षा बोर्ड-2

मुंबई

संरक्षक

डॉ. विशाल चवरे - निदेशक

श्री अविनाश जाधव - उप निदेशक

संपादक-मंडल

सुश्री मीना देशप्रभु-	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
सुश्री स्वप्ना फुलपाडिया	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
सुश्री विद्या मुरलीधरन	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
सुश्री कल्पना असगेकर	पर्यवेक्षक
श्री आनंद कुमार सिंह	कनिष्ठ अनुवादक
अमित कुमार,	आंकडा प्रविष्टि प्रचालक, ग्रेड-बी

बिशेष सहयोग (पृष्ठ निर्माण)

(रचनाओं की मौलिकता का पूर्ण उत्तरादायित्व रचनाकारों का है - संपादक-मंडल)

अनुक्रमणिका

क्रम संख्या	विषय	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
1	संदेश	सुश्री तनुजा मित्तल, प्रधान निदेशक	4
2	संदेश	श्री विशाल चवरे, निदेशक	5
3	संदेश	श्री अविनाश जाधव, उप निदेशक	6
4	संपादकीय	श्री आनंद कुमार सिंह, कनिष्ठ अनुवादक	7
5	पहली बारिश	सुश्री कल्पना असगेकर, पर्यवेक्षक	8
6	गुढिपाड्वा	सुश्री कल्यानी वेदपाठक, पर्यवेक्षक	9
7	मातृभाषा	श्री आनंद कुमार सिंह, कनिष्ठ अनुवादक	10
8	सूर्योपासना का पर्व “छठ पूजा”	सुश्री कविता कुमारी, वैयक्तिक सहायक	12
9	ईद का इस्लाम में क्या है महत्व	श्री इमरान खाटीक, लेखापरीक्षक	15
10	हमारा बिहार	श्री अमित कुमार, आ.प्र.प्र.	16
11	दर्द	श्री पंकज कुमार, आ.प्र.प्र.	19
12	सिजोफ्रेनिया	सुश्री अक्षता पावडे, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	20
13	बेटियां	सुश्री सरला, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	21
14	एहसास	श्री सरोज प्रजापति, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	22
15	मुस्कुराहट: जीवन का एक हसीन सार	श्री संजय आर. कोटलगी, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	23
16	हँसकर बिता लें जिंदगी तथा शुक्रिया ऐ ज़िन्दगी	श्री देवेंद्र कुमार मीना, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	24
17	ये जरुरी तो नहीं	श्री रुपेश कुमार, आई.टी. अनुभाग	25
18	राजभाषा संबंधी जानकारी	आनंद कुमार सिंह, कनिष्ठ अनुवादक	26
19	पाठकों की जानकारी के लिए कार्यालय ज्ञापन		30
20	पदोन्नति तथा स्थानांतरण		31

संदेश

मेरे लिए अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि कार्यालय द्वारा राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन को गति प्रदान करने के उद्देश्य से हिंदी ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" का प्रकाशन किया जा रहा है। हिंदी पत्रिका का प्रथम अंक आपको समर्पित करते हुए मुझे हार्दिक आनंद की अनुभूति हो रही है।

हम सभी को विदित है कि हिंदी हमारे देश की राजभाषा है। राष्ट्र के एकीकरण की दृष्टि से हिंदी ही वह सर्वमान्य एवं सामर्थ्यवान भाषा है जो देश को एकता के सूत्र में बांध सकती है। अतः सभी कार्मिकों को कार्यालयी कार्यों में हिंदी का प्रयोग करने के साथ साथ इसके प्रचार-प्रसार हेतु यथासंभव प्रयास करना चाहिए।

अंत में मै उन सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को धन्यवाद देती हूँ जिनके द्वारा दिए गए रचनाओं के सहयोग से पत्रिका का सफल प्रकाशन संभव हुआ है। मोतियों के रुप में प्राप्त रचनाओं से एक सुंदर हार की तरह पत्रिका के निर्माण हेतु संपादकीय मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं।

मुझे आशा है कि हम सभी एक साथ मिलकर पत्रिका के उत्तरोत्तर विकास हेतु सदैव प्रयत्नशील रहेंगे।

(तनुजा मित्तल)

प्रधान निदेशक

कार्यालय प्रधान निदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा

तथा पदेन सदस्य लेखापरीक्षा बोर्ड-2, मुंबई

संदेश

मुझे यह जानकर हर्ष हो रहा है कि कार्यालय द्वारा हिंदी ई-पत्रिका “लेखापरीक्षा ज्ञानोदय” का प्रकाशन किया जा रहा है। इस प्रकाशन से कार्यालय की राजभाषा के प्रति लगनशीलता की जानकारी होती है। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में इस पत्रिका का प्रकाशन अत्यंत उपयोगी सिद्ध होगा।

कार्यालय के इस कार्य की सराहना करते हुए हिंदी के प्रोत्साहन के लिए लगातार ऐसे प्रयास चलते रहें, ऐसी कामना करता हूँ।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु संपादकीय मंडल को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

(विशाल चवरे)

निदेशक/तेल

कार्यालय प्रधान निदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा

तथा पदेन सदस्य लेखापरीक्षा बोर्ड-2, मुंबई

संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि हमारे कार्यालय द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु त्रैमासिक ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" का प्रकाशन किया जा रहा है। राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढाने में विभागीय पत्रिकाओं का महत्वपूर्ण योगदान होता है। विभागीय पत्रिकाएं कार्मिकों के लिए हिंदी में रुचि के प्रति वर्धक का कार्य करती हैं। पत्रिका के माध्यम से हिंदी का प्रयोग बढाने का प्रयास अत्यंत सराहनीय है।

मैं पत्रिका के मुख्य संरक्षक प्रधान निदेशक महोदया के प्रति आभार प्रकट करता हूँ जिनकी प्रेरणा से इस पत्रिका को प्रारंभ किया गया है। समस्त रचनाकारों को धन्यवाद तथा संपादकीय मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं।

इस आशा के साथ पत्रिका का प्रथम अंक आप सभी के लिए प्रस्तुत करता हुं कि इसे पढने के पश्चात अपनी प्रतिक्रियाओं से हमारा उत्साह बढाएंगे तथा मार्गदर्शन करेंगे।

अविनाश जाधव

उप निदेशक

कार्यालय प्रधान निदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा

तथा पदेन सदस्य लेखापरीक्षा बोर्ड-2, मुंबई

संपादकीय

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि कार्यालय द्वारा त्रैमासिक ई-पत्रिका “लेखापरीक्षा ज्ञानोदय” जारी करने का निर्णय लिया गया है।

उच्च अधिकारियों के उचित दिशा-निर्देश एवं उत्साहवर्धन के फलस्वरुप त्रैमासिक ई-पत्रिका “लेखापरीक्षा ज्ञानोदय” का प्रथम अंक (अप्रैल-जून-2019) राजभाषा हिंदी के प्रचार प्रसार के क्रम में एक प्रयास स्वरुप आपके समक्ष प्रस्तुत है। पत्रिका कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा प्रस्तुत की गई रचनाओं का एक संग्रह है। पत्रिका का मुख्य उद्देश्य राजभाषा हिंदी के प्रति निष्ठा एवं जागरुकता बढाना है। पत्रिका में विविध विषयों पर आधारित लेख, कविता आदि शामिल किए गए हैं। पत्रिका राजभाषा के लिए इस कार्यालय द्वारा किए गए प्रयासों को भी प्रदर्शित करती है।

राजभाषा हमारे देश की कार्यालयी कामकाज की भाषा होने के साथ साथ संपर्क भाषा के रुप में भी प्रयोग की जाती है। इसके विकास में अपना यथासंभव योगदान देने हेतु हमें सदैव प्रयत्नशील रहना चाहिए।

अतः आप सभी से विनम्र अनुरोध है कि पत्रिका को पढने के पश्चात अपने अमूल्य विचारों से हमारा मार्गदर्शन करने हेतु अपनी प्रतिक्रिया प्रेषित करें जिससे हमारे प्रयास को गति मिल सके।

आनंद कुमार सिंह

कनिष्ठ अनुवादक

पहली बारिश

कभी धुआंधार बारिश, हल्की बौछार तो कभी धुप- छांव का खेल , यह रुप है मुंबई के बरसात का। गर्मी की परिसीमा होने के बाद पहली बरसात की बौछारों का अनुभव बहुत ही सुखदायी और सुकुनभरी होती है जिसकी चाहत प्रत्येक मुंबईकर की रगों में होती है। इस मौसम के स्वागत लिए बारिश के गानों के साथ गरमागरम पकौडे हों तो फिर क्या कहने। इसकी अनुभूति अपने आप में इतनी सुखद है कि उसका वर्णन नही किया जा सकता। कुदरत के सुनहरे रुप के साथ सागर का रौद्र रुप देखने का आनंद तो कुछ और ही है।

बारिश आने से पहले ही मॉनसून पिकनिक की चर्चाएं सभी जगहों पर होने लगती है तथा रोज की व्यस्त भागदौड भरी जिंदगी से कुछ फुरसत के पलों के लिए कार्यक्रम बनाना प्रारम्भ हो जाता है।

इस प्रकार से प्रत्येक मुंबईकर अपनी व्यस्तता के बाद भी मुंबई की बारिश का भरपूर आनंद पुरे उत्साह के साथ उठाता तथा बारिश की पहली बूंद के स्पर्श के लिए उत्साहित रहता है।

कल्पना असगेकर

पर्यवेक्षक

गुढीपाड़वा

भारतीय त्यौहार हमारी समृद्ध परंपरा के प्रतीक हैं । भारत में हर उत्सव का अपना धार्मिक महत्व, पवित्रता और इतिहास है । गुढीपाडवा हिंदू त्यौहार में एक महत्वपूर्ण त्यौहार है । भारत के विभिन्य भागों में और मुख्य रूप से महाराष्ट्र में बड़े उत्साह के साथ मनाया जाता है । चैत्र माह भारतीय सौर कैलेंडर के अनुसार हिंदू नव वर्ष का पहला महीना होता है और इस महीने की शुरुआत चैत्र प्रतिपदा से होती है । चैत्र शुद्ध प्रतिपदा महाराष्ट्र के अलावा विभिन्न राज्यों में मनाई जाती है आंध्र प्रदेश और कर्नाटक में उगादी और सिंध प्रांत में चेटी चांद के रुप में मनाया जाता है ।

गुढीपाडवा का इतिहास विभिन्न कहानियों से जाना जा सकता है । एक पौराणिक कथा के अनुसार, इस सृष्टि का निर्माण गुढीपाडवा के दिन ब्रह्मा द्वारा किया गया था । एक अन्य कहानी में, गुढीपाडवा के दिन भगवान राम चौदह साल वनवास में रहने के पश्चात रावण को हराकर अयोध्या लौटे थे । अत: उस समय अयोध्या के लोगों ने भगवान राम के स्वागत में घर के बाहर गुढी और तोरण लगाया था । गुढीपाडवा का एक और इतिहास यह है कि शालिवाहन नामक एक कुम्हार के पुत्र ने शकों को हराने के लिए 6000 मीट्टी की मूर्तिया बनाई थी । उन मूर्तियों में प्राण डालकर उनकी मदद से शकोंको पराजित किया था । इसतरह शालिवाहन राजा के नाम से नई कालगणना शुरुआत हो गई जिसे शालिवाहन शक के नाम से जाना जाता है । गुढीपाडवा का इतिहास समृद्ध और पवित्र माना जाता है ।

महाराष्ट्र में घरों के प्रवेश द्वार के सामने रंगोली बनाई जाती है, तोरण लगाए जाते है और गुढी को खडा करके उसको फुलोंसे सजाकर पूजा की जाती है । गुढी निर्माण करने के लिए एक लंबी बांस की छड़ी के उपर धातु के कलश को रखकर एक नया वस्त्र रखा जाता है और फूलों तथा शक्कर से बनाई गई माला पहनाई जाती हैं । गुढीपाडवा के दिन नीम के पत्तों का सेवन किया जाता है । नीम के पत्तों को आयुर्वेद में अमृत के समान माना जाता है जिसका वैज्ञानिक दृष्टि से भी महत्व है । नीम के पत्ते पचाने में मदद करते है और स्वास्थ्य के लिए बहुत अच्छे होते है । नहाने के पानी में अमृत की पत्तियां डालने से शरीर ठंडा हो जाता है । गुढीपाडवा पवित्रता, मंगलता और समृद्धि का प्रतीक है । आजकल, गुढीपाडवा के दिन, लोग पारंपरिक पोशाक में तैयार होते हैं और एक साथ इकट्ठा होते हैं तथा एक-दूसरे को बधाई एवं शुभकामनाएं देते हैं।

कल्याणी वेदपाठक, पर्यवेक्षक

मातृभाषा

मातृभाषा वह भाषा है जिसमे मनुष्य अपनी पहचान के साथ दुनिया में पदार्पण करता है । जन्म के साथ साथ अबोध शिशु जिन ध्वनियों और सांसारिक वस्तुओं से परिचित होता है वह बच्चे को प्रतीकों की नई दुनिया में प्रवेश दिलाता है । यह प्रक्रिया सरल होने के साथ साथ प्रभावी होती है क्योंकि बच्चे के आसपास इस भाषा में निरंतर अभ्यास चलता रहता है । इस प्रकार से भाषा की दुनिया का एक सुदृढ़ आधार तैयार होता है जो सहज और स्वाभाविक होने के कारण सरल और सुग्राह्य होता है । धीरे- धीरे बच्चा ध्वनि, शब्द और अर्थ के प्रयोग को सीखना प्रारम्भ करता है तथा बच्चे को भाषा के रुप में एक नया उपकरण प्राप्त होता है जो उसके लिए दुनिया में अभिव्यक्ति का साधन बनता है। चूँकि मातृभाषा का उपयोग अपने आप ही आसानी से प्राप्त हो जाता है। इस कारण से उसकी क्षमता किसी अन्य भाषा की तुलना में अधिक होती है। मातृभाषा के उपयोग में बच्चे का बौद्धिक विकास किसी अन्य आरोपित भाषा की तुलना में अधिक तीव्र होता है । साथ ही मातृभाषा के साथ बच्चा अपनी सामाजिक-सांस्कृतिक दुनिया से भी जुडा रहता है। एक बार मातृभाषा पर पकड़ आ जाने पर भाषा का स्वभाव समझ में आ जाता है और तब अन्य भाषाओं को भी अर्जित करना सरल हो जाता है।

भारत में भाषा की स्थिति यहाँ की ऐतिहासिक कारणों से इस क़दर आच्छादित हो गई है कि आज भी हम किंकर्तव्यविमूढ बने बैठे हैं और भाषा के संबंध में कोई प्रभावकारी नीति नहीं बना सके हैं । शिक्षा और भाषा वे विषय हैं जिनके संबंध में उचित रुपरेखा बनाने की आवश्यकता है।

आज हम भारतीयों ने ज्ञान के लिए अंग्रेज़ी को अनिवार्य मान लिया है। अगर आम आदमी की बात की जाय तो उसे यह लगता है कि अंग्रेज़ी में महारत हासिल करना ही सफलता का मानदंड है। इस भ्रांति के कारण देश में अंग्रेज़ी माध्यम के विद्यालयों की पौ बारह है और भारत में अंग्रेज़ी के प्रयोग की एक नई दुनिया का निर्माण हो गया हैं। बच्चे द्वारा हिंदी और अंग्रेजी के मिश्रीत प्रयोग पर अभिभावक गर्व का अनुभव करते हैं । इस प्रकार से हिंगलिश का प्रयोग बढता जा रहा है । इस संबंध में एक दृष्टांत देखें:

“एक घर के दो भाई एक ही कक्षा में पढते थे । एक बार उनके मामा जी आए और उनके अध्ययन के विषय में उनसे चर्चा करने लगे । तभी एक भाई दुसरे की ओर इशारा करते हुए

बोला ए तो बहुत दंड(फाइन) भरता है । मामा जी ने कारण पूछा तो उसने बताया कि ए कक्षा में हिंदी में बात करता है और हिंदी में बात करने पर दंड है ।

तब मामा जी ने उससे उसके बारे में पूछा तो उसने बताया कि मैं तो बोलता ही नही हूँ।"

इस प्रकार से एक बच्चा अपनी प्रतिभा का प्रयोग दंड के डर से उचित रुप से नही करता है तो यह विचार करने योग्य है ।

आज भारतीय भाषाएं सामर्थ्यवान होते हुए भी अंग्रेजी के सामने सम्मानित नही हो पाती है। अंग्रेजी का प्रयोग इस तरह से छाया हुआ है कि लोग गलत अंग्रेजी या फिर हिंगलिश के प्रयोग पर भी गर्व का अनुभव करते हैं।

हमारी मातृभाषा केवल विचारों को अभिव्यक्त करने का काम नहीं करती बल्कि वह विचारों की नई रचना के साथ नए कार्यों का निर्माण करती है और नया आकार भी देती है। भाषा स्वयं में एक कर्म है और अगणित कर्मों की जननी भी है । अपनी मातृभाषा के प्रयोग से आत्मविश्वास आता है और आत्मविश्वास से भरा हुआ व्यक्ति किसी भी कार्य को सुगमता से करने का साहस रखता है । मातृभाषा से हमारी संस्कृति जुडी हुई है। इसलिए मातृभाषा के साथ हमें अपनी संस्कृति को भी सुरक्षित करने की आवश्यकता है.

अतः मातृभाषा पर प्रत्येक व्यक्ति को गर्व करना चाहिए तथा इसको सुदृढ बनाने हेतु प्रयास करना चाहिए जिससे हमारी संस्कृति भी सुरक्षित रहे ।

आनंद कुमार सिंह

कनिष्ठ अनुवादक

सूर्योपासना का पर्व "छठ पूजा"

मान्यता है कि देव माता अदिति ने छठ पूजा की शुरुआत की थी। एक कथा के अनुसार प्रथम देवासुर संग्राम में जब असुरों के हाथों देवता हार गये थे, तब देव माता अदिति ने तेजस्वी पुत्र की प्राप्ति के लिए छठी मैया की आराधना की थी। तब प्रसन्न होकर छठी मैया ने उन्हें सर्वगुण संपन्न तेजस्वी पुत्र होने का वरदान दिया था। इसके बाद अदिति के पुत्र हुए त्रिदेव रूप आदित्य भगवान, जिन्होंने असुरों पर देवताओं को विजय दिलायी।

पुराणों से एक कथा के अनुसार राजा प्रियवद को कोई संतान नहीं थी, तब महर्षि कश्यप ने पुत्रेष्टि यज्ञ कराकर उनकी पत्नी मालिनी को यज्ञाहुति के लिए बनायी गयी खीर दी। इसके प्रभाव से उन्हें पुत्र हुआ परन्तु वह मृत पैदा हुआ। प्रियवद पुत्र को लेकर श्मशान गये और पुत्र वियोग में प्राण त्यागने लगे। उसी वक्त ब्रह्माजी की मानस कन्या देवसेना प्रकट हुई और कहा कि सृष्टि की मूल प्रवृत्ति के छठे अंश से उत्पन्न होने के कारण मैं षष्ठी कहलाती हूँ। हे! राजन् आप मेरी पूजा करें तथा लोगों को भी पूजा के प्रति प्रेरित करें। राजा ने पुत्र इच्छा से देवी षष्ठी का व्रत किया और उन्हें पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। यह पूजा कार्तिक शुक्ल षष्ठी को हुई थी।

छठ पर्व मूलतः सूर्य की आराधना का पर्व है, जिसे हिन्दू धर्म में विशेष स्थान प्राप्त है। हिन्दू धर्म के देवताओं में सूर्य ऐसे देवता हैं जिन्हें मूर्त रूप में देखा जा सकता है।

सूर्य की शक्तियों का मुख्य श्रोत उनकी पत्नी ऊषा और प्रत्यूषा हैं। छठ में सूर्य के साथ-साथ दोनों शक्तियों की संयुक्त आराधना होती है। प्रात:काल में सूर्य की पहली किरण (ऊषा) और सायंकाल में सूर्य की अंतिम किरण (प्रत्यूषा) को अर्घ्य देकर दोनों को नमन किया जाता है।

भारत में सूर्योपासना के लिए प्रसिद्ध पर्व छठ या षष्ठी पूजा है। यह मूलत: सूर्य षष्ठी व्रत होने के कारण इसे छठ कहा गया है। यह पर्व वर्ष में दो बार मनाया जाता है। पहली बार चैत्र में और दूसरी बार कार्तिक में। चैत्र शुक्ल पक्ष षष्ठी पर मनाये जाने वाले छठ पर्व को चैती छठ व कार्तिक शुक्ल पक्ष षष्ठी पर मनाये जाने वाले पर्व को कार्तिकी छठ कहा जाता है। पारिवारिक सुख-समृद्धी, पुत्र की प्राप्ति तथा मनोवांछित फल प्राप्ति के लिए यह

पर्व मनाया जाता है। स्त्री और पुरुष समान रूप से इस पर्व को मनाते हैं। यह मुख्य रूप से बिहार, झारखण्ड, उत्तर प्रदेश और नेपाल में मनाया जाता है।

छठ पूजा चार दिवसीय उत्सव है। इसकी शुरुआत कार्तिक शुक्ल चतुर्थी को तथा समाप्ति कार्तिक शुक्ल सप्तमी को होती है। इस दौरान व्रतधारी लगातार 36 घंटे का व्रत रखते हैं।

'नहाय-खाय'- पहला दिन कार्तिक शुक्ल चतुर्थी को 'नहाय-खाय' के रूप में मनाया जाता है। सबसे पहले घर की साफ-सफाई कर उसे पवित्र किया जाता है। इसके बाद छठव्रती स्नान कर पवित्र तरीके से बने शुद्ध शाकाहारी भोजन ग्रहण कर व्रत की शुरुआत करते हैं। भोजन में चने की दाल (कद्दू-दाल), कद्दू की सब्जी, कद्दू के पकौड़े और चावल ग्रहण किया जाता है

'लोहंडा और खरना'- दूसरे दिन कार्तिक शुक्ल पंचमी को व्रतधारी दिनभर का उपवास रखने के बाद शाम को भोजन करते हैं। इसे 'खरना' कहा जाता है।

इसके बाद सप्तमी को पारण करने तक निर्जला व्रत रखा जाता है। खरना का प्रसाद लेने के लिए आस-पास के सभी लोगों को निमंत्रित किया जाता है। प्रसाद के रूप में गन्ने के रस में बने हुए चावल की खीर के साथ दूध, चावल का पिट्ठा और घी चुपड़ी रोटी बनाई जाती है।

'संध्या अर्घ्य'- तीसरे दिन कार्तिक शुक्ल षष्ठी को छठ का प्रसाद बनाया जाता है। प्रसाद के रूप में ठेकुआ, जिसे कुछ क्षेत्रों में टिकरी भी कहते हैं, के अलावा चावल के लड्डू, जिसे लड़ुआ भी कहा जाता है, बनाते हैं। इसके अलावा चढ़ावा के रूप में चीनी से बनाया गया साँचा और फल भी छठ प्रसाद के रूप में शामिल होता है।

शाम को पूरी तैयारी और व्यवस्था कर बाँस की टोकरी में अर्घ्य का सूप सजाया जाता है और व्रति के साथ परिवार तथा पड़ोस के सारे लोग सूर्य को अर्घ्य देने घाट की ओर चल पड़ते हैं। सभी छठव्रति एक नियत तालाब या नदी किनारे इकट्ठा होकर सामूहिक रूप से सूर्य तथा छठी मैया को तालाब या नदी में खड़े होकर फल, फूल, लड़ुआ, ठेकुआ, नारियल, गन्ना, दीपक से सजे सूप से पूजा कर सूर्य को जल और दूध का अर्घ्य देकर अर्घ्य दान संपन्न करते हैं। सभी व्रति तथा श्रद्धालु घर वापस आते हैं, व्रति घर वापस आकर गाँव के पीपल के पेड़ जिसको ब्रह्म बाबा कहते हैं वहाँ जाकर पूजा करते हैं।

'उषा अर्घ्य'- चौथे दिन कार्तिक शुक्ल सप्तमी की सुबह उदियमान सूर्य को अर्घ्य दिया जाता है। व्रति वहीं पुनः इकट्ठा होते हैं जहाँ उन्होंने पूर्व संध्या को अर्घ्य दिया था। पुनः पिछले शाम की प्रक्रिया की पुनरावृत्ति होती है। पूजा के पश्चात् व्रति कच्चे दूध का शरबत पीकर तथा थोड़ा प्रसाद खाकर व्रत पूर्ण करते हैं जिसे पारण या परना कहते हैं।

छठ व्रत करनेवाले व्यक्ति की सभी मनोकामना पूर्ण होती है। छठी मैया उनके परिवार और संतान की रक्षा करती हैं।

छठ के विभिन्न अवसरों पर जैसे प्रसाद बनाते समय, खरना के समय, अर्घ्य देने के लिए जाते समय, अर्घ्य दान के समय और घाट से घर लौटते समय अनेकों भक्ति-भाव से पूर्ण लोकगीत गाये जाते हैं। जैसे :

- 'केलवा जे फरेला घवद से, ओह पर सुगा मेड़राय ।
- काँच ही बाँस के बहंगिया, बहंगी लचकत जाए'।
- सेविले चरन तोहार हे छठी मइया। महिमा तोहर अपार।
- उगु न सुरुज देव भइलो अरग के बेर।
- निंदिया के मातल सुरुज अँखियो न खोले हे।

कविता कुमारी

वैयक्तिक सहायक

ईद का इस्लाम में क्या है महत्व

रमजान के रोजे (उपवास) के 30/29 दिनों के माह-ए-पाक के बाद जब चांद दिखता है तो ईद की तस्दीक होती है। लोग ऊपरवाले से एक दूसरे की खुशी और अमन-चैन की दुआ करते हैं। यह पर्व खुशियां बांटने का है तथा लोगों को मोहब्बत और इज्जत आफजाई सिखाता है। आइए जानते हैं कि ईद-ए-मुबारक क्यों मनाते हैं ?

ईद का पर्व हजरत मोहम्मद साहब की बद्र के युद्ध में फतह की खुशी में मनाया जाता है। पहली बार यह पर्व 624 ईस्वी में मनाया गया था। इस दिन लोग ईदगाह में एक साथ बैठकर नमाज अदा करते हैं। खुदा से मुल्क में मोहब्बत और अमन-चैन की फरियाद करते हैं। हिजरी कैलेंडर के अनुसार ईद का पर्व साल में दो बार ईद-उल-फितर और ईद-उल-अजहा के नाम से मनाया जाता है। लोग इन दोनों ही मुबारक दिनों में विशेष नमाज पढ़ते हैं।

ईद अल्लाह से इनाम लेने का दिन होता है। इस दिन मुस्लिम समुदाय के लोग एक साथ नमाज पढ़ते हैं। अगर किसी से नाराजगी भी हो तो उसे भुलाकर एक-दूसरे से गले मिलते हैं और जरूरतमंदों की मदद करते हैं। ऐसा फरमाया गया है कि ऐसा करने से अल्लाह अपने बंदों पर मेहरबान होता है और उन्हें बरकतों से नवाजता है ।

ईद को मुसलमान 30 दिनों के बाद पहली बार दिन में खाना खाते हैं। उपवास की समाप्ति की खुशी के अलावा, ईद के दिन मुसलमान अल्लाह का शुक्रियादा इसलिए भी करते हैं कि उन्होंने महीने भर के उपवास रखने की शक्ति दी। ईद के दौरान बढ़िया खाने के अतिरिक्त नए कपड़े भी पहने जाते हैं और परिवार और दोस्तों के बीच तोहफ़ों का आदान-प्रदान होता है। सेवईयां का शीर खुरमा इस त्यौहार की सबसे जरूरी खाद्य पदार्थ है जिसे सभी बड़े चाव से खाते हैं। ईद उल-फ़ितर के दौरान घरेलू नाराजगी को निपटाया जाता है।

ईद के दिन मस्जिद में सुबह की नमाज (प्रार्थना) से पहले हर मुसलमान का फ़र्ज़ है कि वो दान या भिक्षा दे। इस दान को ज़कात उल-फ़ित्र कहते हैं। यह दान दो किलोग्राम कोई भी प्रतिदिन खाने की चीज़ का हो सकता है, मिसाल के तौर पर आटा, गेहूं या फिर उन दो किलोग्रामों का मूल्य भी। नमाज (प्रार्थना) से पहले यह ज़कात ग़रीबों में बाँटा जाता है। पूरे विश्व में ईद की खुशी पूरे हर्षोल्लास से मनाई जाती है।

इमरान खाटिक

लेखापरीक्षक

हमारा बिहार

बिहार भारत का एक राज्य है जिसकी राजधानी पटना है। बिहार का प्राचीन नाम मगध था जिसकी राजधानी राजगीर थी। बिहार नाम, बौद्ध सन्यासियों के ठहरने के स्थान विहार शब्द से संबंधित है जिसे विहार के स्थान पर इसके अपभ्रंश रूप बिहार से संबोधित किया जाता है। यह क्षेत्र गंगा नदी तथा उसकी सहायक नदियों के उपजाऊ मैदानों में बसा है। वर्ष 1936 में ओडिशा और वर्ष 2000 में झारखण्ड बिहार से अलग होकर अलग राज्य बने।

बिहार मे मुख्यतः हिंदी, भोजपुरी, मगही, उर्दू, अंगीका और मैथिली भाषायें बोली जाती है। बिहार ने हिंदी को सबसे पहले राज्य की अधिकारिक भाषा माना ।

बिहार अपने खानपान की विविधता के लिए प्रसिद्ध है। मिठाईयों की विभिन्न किस्मों के अतिरिक्त अनरसा, खाजा, मोतीचूर लड्डू, तिलकुट यहाँ की खास पसंद है। सत्तू, चूड़ा-दही और लिट्टी-चोखा जैसे स्थानीय व्यंजन तो यहाँ के लोगों का मनपसंद व्यंजन हैं।

एक समय बिहार शिक्षा के सर्वप्रमुख केन्द्रों में गिना जाता था। नालंदा विश्वविद्यालय, विक्रमशिला विश्वविद्यालय तथा ओदंतपुरी विश्वविद्यालय प्राचीन बिहार के गौरवशाली अध्ययन केंद्र थे। 1917 में खुलने वाला पटना विश्वविद्यालय काफी हदतक अपनी प्रतिष्ठा कायम रखने में सफल रहा।

बिहार के प्रसिद्ध व्यक्ति

बाबू कुंवर सिंह: वीर कुंवर सिंह1857 के प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के सिपाही और महानायक थे।

राजेन्द्र प्रसाद : राजेंद्र प्रसादभारत के प्रथम राष्ट्रपतिबने।

चंद्रगुप्त मौर्य: ये मौर्य साम्राज्य के सस्थापक थे।

अशोक: विश्वप्रसिद्ध एवं शक्तिशाली भारतीय मौर्य राजवंश के महान सम्राट थे।

महावीर: भगवान महावीर जैन धर्म के चौंबीसवें (२४वें) तीर्थंकर है। जैन समाज द्वारा महावीर स्वामी के जन्मदिवस को महावीर-जयंती तथा उनके मोक्ष दिवस को दीपावली के रूप में धूम धाम से मनाया जाता है।

चाणक्य: चाणक्य (अनुमानतः ईसापूर्व 375 - ईसापूर्व 283) चन्द्रगुप्त मौर्य के महामंत्री थे। वे 'कौटिल्य' नाम से भी विख्यात हैं। वे तक्षशिला विश्वविद्यालय के आचार्य थे।[1] उन्होने नंदवंश का नाश करके चन्द्रगुप्त मौर्य को राजा बनाया। उनके द्वारा रचित अर्थशास्त्र राजनीति, अर्थनीति, कृषि, समाजनीति आदि का महान ग्रंन्थ है। अर्थशास्त्र मौर्यकालीन भारतीय समाज का दर्पण माना जाता है।

आर्यभट्ट: प्राचीन भारत के एक महान ज्योतिषविद् और गणितज्ञ थे। इन्होंने आर्यभटीय ग्रंथ की रचना की जिसमें ज्योतिषशास्त्र के अनेक सिद्धांतों का प्रतिपादन है। इसी ग्रंथ में इन्होंने अपना जन्मस्थान कुसुमपुर और जन्मकाल शक संवत् 398 लिखा है। बिहार में वर्तमान पटना का प्राचीन नाम कुसुमपुर था।

उस्ताद बिस्मिल्ला ख़ाँ : हिन्दुस्तान के प्रख्यात शहनाई वादक थे। उनका जन्म डुमराँव, बिहार में हुआ था। सन् 2001 में उन्हें भारत के सर्वोच्च सम्मान भारत रत्न से सम्मानित किया गया। वह तीसरे भारतीय संगीतकार थे जिन्हें भारत रत्न से सम्मानित किया गया है।

गरू गोविंद सिंह: सिखों के 10वे गुरु थे। इनका जन्म पटना में हुआ था

रामधारीसिंहदिनकर: रामधारी सिंह दिनकर हिन्दी के एक प्रमुख लेखक, कवि व निबन्धकार थे। वे आधुनिक युग के श्रेष्ठ वीर रस के कवि के रूप में स्थापित हैं। दिनकर' स्वतन्त्रता पूर्व एक विद्रोही कवि के रूप में स्थापित हुए और स्वतन्त्रता के बाद 'राष्ट्रकवि' के नाम से जाने गये। इनके द्वारा रचित उर्वशी को भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार तथा कुरुक्षेत्र को विश्व के 100 सर्वश्रेष्ठ काव्यों में 74 वाँ स्थान दिया गया।

बिहार के प्रमुख दर्शनीय स्थल: -

गया एवं बोधगया

हिंदू धर्म के अलावे बौद्ध धर्म मानने वालों का यह सबसे प्रमुख दार्शनिक स्थल है। पितृपक्ष के अवसर पर यहाँ दुनिया भर से हिंदू आकर फल्गू नदी किनारे पितरों को तर्पण करते हैं। विष्णुपद मंदिर, भगवान बुद्ध से जुड़ा पीपल का वृक्ष तथा महाबोधि मंदिर के अलावा तिब्बती मंदिर, थाई मंदिर, जापानी मंदिर, बर्मा का मंदिर, बौधनी पहाड़ी (इमामगंज)

सासाराम

अफगान शैली में बनाया गया अष्टकोणीय शेरशाह का मक़बरा वास्तुकला का अद्भुत नमूना है।

चंपारण

सम्राट अशोक द्वारा लौरिया में स्थापित स्तंभ, लौरिया का नंदन गढ़, नरकटियागंज का चानकीगढ़, वाल्मीकिनगर जंगल, बापू द्वारा स्थापित भीतीहरवा आश्रम, तारकेश्वर नाथ तिवारी का बनवाया रामगढ़वा हाई स्कूल, स्वतंत्रता आन्दोलन के समय महात्मा गाँधी एवं अन्य सेनानियों की कर्मभूमि तथा अरेराज में भगवान शिव का मन्दिर

सुल्तानगंजः- भागलपुर से पश्चिम में लगभग 28 किमी की दूरी पर है। जुलाई और अगस्त के महीनों में सबसे ज्यादा श्रद्धालु यहां बहने वाली गंगा नदी में डुबकी लगाने आते हैं। सुल्तानगंज से देवघर का 80 किमी लंबा काफी दिलचस्प ट्रैक है। देवघर में स्थित भगवान बैद्यनाथ के मंदिर के दर्शन करने के लिए श्रद्धालु नंगे पांव यात्रा करते हैं। यहां पर बाबा अजगैबिनाथ मंदिर भी स्थित है जो कि चट्टान को काटकर बनाई गई नक्काशियों के लिए प्रसिद्ध है।

कूप्पा घाटः- कूप्पा का मतलब होता है गुफा और घाट का मतलब होता है नदी के तट पर स्थित। कूप्पा घाट की ही गुफाओं में महर्षि मेहि ने कुछ महीनों तक 'योग ऑफ इनर साउंड' का अभ्यास किया था। आज इस गुफा को शानदार आश्रम में तब्दील कर दिया गया है। गुरु पूर्णिमा जैसे अवसरों पर तो यहां श्रद्धालुओं की भारी भीड़ उमड़ती है।

खनकाह ए शाहबजिया: भागलपुर रेलवे स्टेशन के पास स्थित इस विशाल मस्जिद का निर्माण औरंगजेब ने करवाया था। अल्लाह के 40 सूफियों में से एक सूफी शाहबाज़ रहमुत्तलाह का पवित्र स्थान भी यहां स्थित है। यहां पर स्थित तालाब के पानी को औषधीय गुणों से युक्त माना जाता है।

ब्रिटिश कालीन भवन: जालान म्यूजियम, गोलघर, पटना संग्रहालय, विधान सभा भवन, हाईकोर्ट भवन, सदाकत आश्रम

अमित कुमार

आंकडा प्रविष्टि प्रचालक, ग्रेड-बी

“दर्द”

दर्द एक ऐसा शब्द है जिसका एहसास केवल प्रभावित व्यक्ति को ही होता है। किसी अन्य के दर्द को अनुभव करना अत्यंत ही कठिन है इसलिए दुसरों के दर्द को लोग हल्के लेते है। इस संबंध में हमारे स्थानीय भाषा में एक लोकोक्ति प्रसिद्ध है :जाके पाँव न फटी बिवाई वह क्या जाने पीर पराई।

अक्सर यह पाया गया है कि लोगो को अपना दर्द पहाड़ और दूसरो का दर्द तिनका सा लगता है। लोग कहते है कि भले दिल वाले हमेशा खुश रहते हैं लेकिन मुझे लगता है कि भला दिल का मनुष्य हमेशा दर्द में रहता क्योकि वह हमेशा दूसरे व्यक्ति से अच्छाई की उम्मीद करता है जो की हमेशा संभव नही है। ,

यह शासवत सत्य है कि दर्द और खुशी एक सिक्के के दो पहलू की तरह हैं क्योकि हर रात के बाद दिन होता है।

हमें जीवन में कभी भी दर्द से घबराना नहीं चाहिए क्योंकि यही वह समय होता है जब मनुष्य परिस्थितियों का सामना करके स्वयं को हर परिस्थिति के लिए मजबूत बनाने का कौशल सिखता है। इसके बाद वह जीवन में प्रत्येक दर्द का सामना करने की हिम्मत रखता है।

अतः हमें किसी भी प्रकार के दर्द का सामना अपनी आत्मशक्ति और पूर्ण विश्वास के साथ करना चाहिए।

पंकज कुमार

आंकडा प्रविष्टि प्रचालक

सिजोफ्रेनिया (Schizophrenia)

सिजोफ्रेनिया एक मानसिक बिमारी है । इसको मन का कैंसर भी कहते हैं । यह मानसिक बिमारी किसी भी उम्र में हो सकती है लेकिन इसके लक्षण युवावस्था में ज्यादातर दिखाई देते हैं । इस बिमारी से ग्रस्त व्यक्ति वास्तविक दुनिया से दूर अपने एक अलग दुनिया में रहता है। मरीज अपनी अलग दुनिया की सुनाई देने वाली आवाजों को सही मान लेता है । उनकी संवेदनाएं और अभिव्यक्तियां शून्य हो जाती हैं । इस बिमारी का मरीज जीवन में रुचि खो देता है जिससे वह सुस्त और उदासीन हो जाता है । उनको ऐसा लगता है कि लोग उनके बारे में हमेशा बुरी बातें कर रहे हैं ।

इस बिमारी का कारण आनुवंशिक, न्यूरोट्रांसमीटर केमीकल में बदलाव या कुछ दवाईयों का इस्तेमाल है ।

रोगी की सहायता के लिए उसे तुरंत मनोचिकित्सक के पास ले जाना चाहिए । इस बिमारी का इलाज अगर शुरुआत से ही किया जाए तो ठीक होने में आसानी हो जाती है ।

इस बिमारी का लक्षण युवावस्था में दिखाई देने के कारण माता-पिता को यही लगता है कि बच्चा बिगड गया है या उसे बुरी संगत लग गई है । इस बिमारी में मरीज अकेला रहने लगता है । उसे आवाजें सुनाई देती हैं जो अन्य लोंगों को सुनाई नही देती हैं तथा आकृतियां दिखाई देती हैं जो अन्य लोंगों को दिखाई नही देती हैं ।

इस बिमारी का शुरुआती कारण स्वभाव में विचित्र परिवर्तन है । अगर समय पर बिमारी की पहचान कर उपचार की शुरुआत की जाती है तो मरीज अपेक्षाकृत अच्छे ढंग से ठीक हो सकता है ।

इस बिमारी से पिडित मरीज के साथ प्यार से व्यवहार बहुत आवश्यक है । अगर कोई शारिरिक रुप से अपंग है किंतु मानसिक दृष्टि से मजबूत है तो वह कठिन चुनौतियों का सामना कर सकता है लेकिन अगर कोई शारिरिक रुप से मजबूत है किंतु मानसिक दृष्टि से दुर्बल है तो वह स्वयं की भी देखभाल नही कर सकता है और इन मरीजों को संभालना उनके कुटुंब की लंबे समय तक चलने वाली अग्निपरीक्षा होती है ।

संदेश- इस लेख का मूल उद्देश्य यह है कि अपने बच्चों के साथ समय बिताएं, उन पर ध्यान दें । उनके व्यवहार में होने वाले परिवर्तन को पहचाने तथा उन्हें समय समय पर प्यार से समझाएं और आवश्यकतानुसार बाल मनोवैज्ञानिक से सलाह लें ।

अक्षता पावडे,

वरिष्ठ लेखापरीक्षक

बेटियां

इस कार्यालय के तनुजा-ओं (ladies/daughters) पर कुछ सुवर्ण विचार

कल्पना कीजिये उषा सी लाली

जब मीना जैसे आँखो मे ज्योति बनकर चमकती हैं,

तो सबके होठों पर कविता गीत बनकर उभरती हैं,

और आँगन में जुईली के लता की बेले खिलती हैं,

जहां राधिका और मैथिली मुरली के संगीत पर संग संग झूमती हैं,

इस आँगन मे जयश्री राम के गूंज से राज राजेश्वरी सा माहौल बन जाता है,

जहां सबको विद्या, अन्नपूर्णा और मीनल का अमूल्य वरदान से तृप्ति मिलती हैं,

और सबका अक्षता और शुबदा से कल्यान होता हैं,

इस तरह जीवन सात (सोनल, नीना, शानन, श्रुतिका, अनु, शांतला और फातिमा) रंगो का स्वप्ना लगता हैं !

रचनाकार: सरला

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

एहसास

मुझे हंसी उधार दे दो,

मै हंसना भूल गया हूँ ।

मैं था, पद था, अहंकार था,

प्राय दूसरो पर हंसा करता था ।

दूसरों की ये हंसी ही,

मेरे अहंकार का पोषण करती थी ।

समय ने करवट ली,

मेरे छोड़े वे सारे शब्द बाण,

पुनः लौट कर आने लगे ।

मै भी भीष्म पितामह की तरह,

अपने ही बाणों की शय्या पर पड़ा,

सिंहावलोकन कर रहा था ।

जीवन के उत्तरार्ध में यह,

मृत्यु की विभीषिका से भी खौफनाक था ।

यह कैसा एहसास है,

जो न जीने देता है, न मरने देता है।

(सरोज एस प्रजापति)

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

मुस्कुराहट: जीवन का एक हसीन सार

आज किसी की मुस्कुराहट का कारण बनो।

अपनी मुस्कान दुनिया के साथ साझा करें।

यह दोस्ती और शांति का प्रतीक है।

मैंने एक साधारण मुस्कान द्वारा सबसे मुश्किल दिलों की नरमी देखी है।

आज किसी अजनबी को अपनी एक मुस्कान दें।

यह एकमात्र धूप हो सकती है जो वह पूरे दिन देखता है।

जब तक आप जीते हैं तब तक मुस्कुराते रहें,

क्योंकि यह हर किसी के दिन को रोशन करता है।

एक साधारण मुस्कान, एक हंसमुख नमस्ते या प्रोत्साहन का एक शब्द।

यह आश्चर्यजनक है कि आप पर क्या प्रभाव पड़ेगा।

एक मुस्कुराहट अक्सर महत्वपूर्ण चीज होती है जिसका एक मुस्कान के साथ भुगतान किया जाता है।

संजय आर कोटलगी

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

हँसकर बिता लें जिंदगी

कल न हम होंगे न कोई गिला होगा,

सिर्फ सिमटी हुई यादों का सिलसिला होगा,

जो लम्हे हैं चलो हँसकर बिता लें,

जाने कल जिंदगी का क्या फैसला होगा।

शुक्रिया ऐ ज़िन्दगी

शुक्रिया ज़िन्दगी...जीने का हुनर सिखा दिया,

कैसे बदलते हैं लोग चंद कागज़ के टुकड़ो ने बता दिया,

अपने परायों की पहचान को आसान बना दिया,

शुक्रिया ऐ ज़िन्दगी जीने का हुनर सिखा दिया।

देवेंद्र कुमार मीणा

वरिष्ठ लेखापरीक्षक

ये ज़रूरी तो नहीं

रिश्तों के वृक्ष तले, सुख की छांव मिले, ये ज़रूरी तो नहीं

ज़िन्दगी की राह मे,हर कदम पर फूल खिले, ये ज़रूरी तो नहीं

होठों की मुस्कान को, आँखों का साथ मिले, ये ज़रूरी तो नहीं

सूरत के आइने मे, सीरत भी साफ दिखे, ये ज़रूरी तो नहीं

सपनों की तलाश मे, अपनो का साथ मिले, ये ज़रूरी तो नहीं

बहती हुई दरिया मे, हर कश्ती पार लगे, ये ज़रूरी तो नहीं

गरजते हुए बादलो मे, बारिश की बूंद मिले, ये ज़रूरी तो नहीं

धर्म की बस्ती मे, इंसानियत का वास मिले, ये ज़रूरी तो नहीं

सुबह अमावश रात के, चमकीला सूरज साफ दिखे, ये ज़रूरी तो नहीं

दुनिया चलाने वालों मे, सृजन का ख्वाब बसे, ये ज़रूरी तो नहीं

रुपेश कुमार,

आई.टी. अनुभाग

राजभाषा संबंधी जानकारी

संविधान का अनुच्छेद 343: संघ की राजभाषा--

संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी होगी, संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाले अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतर्राष्ट्रीय रूप होगा।

संविधान का अनुच्छेद 351. हिंदी भाषा के विकास के लिए निदेश--

संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिंदी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे जिससे वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिंदुस्थानी में और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए और जहां आवश्यक या वांछनीय हो वहां उसके शब्द-भंडार के लिए मुख्यतः संस्कृत से और गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करे।

राजभाषा अधिनियम 1963 (यथा संशोधित 1967) की धारा 3(3) के अनुसार हिंदी एवं अंग्रेजी दोनों भाषाओं में जारी किए जाने वाले दस्तावेज --

राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा (3)3 के अंतर्गत अनिवार्य रुप से द्विभाषी जारी किए जाने वाले कागज़ात

1- सामान्य आदेश (General Orders)

2 -संकल्प(Resolution)

3- परिपत्र(Circulars)

4-नियम(Rules)

5- प्रशासनिक या अन्य प्रतिवेदन (Administrative or other reports)

6- प्रेस विज्ञप्तियां (Press Release/Communiques)

7- संविदाएं(Contracts)

8- करार(Agreements)

9- अनुज्ञप्तियां(Licenses)

10- निविदा प्रारुप (Tender Forms)

11- अनुज्ञा पत्र (Permits)

12- निविदा सूचनाएं (Tender Notices)

13- अधिसूचनाएं(Notifications)

14- संसद के समक्ष् रखे जाने वाले प्रतिवेदन तथा कागज़ पत्र (Reports and documents to be laid before the Parliament)

राजभाषा (संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग) नियम, 1976

(यथा संशोधित, 1987, 2007 तथा 2011)

इनका विस्तार, तमिलनाडु राज्य के सिवाय सम्पूर्ण भारत पर है।

'क्षेत्र क' से बिहार, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड़, उत्तराखंड राजस्थान और उत्तर प्रदेश राज्य तथा अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, दिल्ली संघ राज्य क्षेत्र अभिप्रेत है;

'क्षेत्र ख' से गुजरात, महाराष्ट्र और पंजाब राज्य तथा चंडीगढ़, दमण और दीव तथा दादरा और नगर हवेली संघ राज्य क्षेत्र अभिप्रेत हैं;

'क्षेत्र ग' से उपर्युक्त राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों से भिन्न राज्य तथा संघ राज्य क्षेत्र अभिप्रेत है;

नियम-5 : हिन्दी में प्राप्त पत्रादि के उत्तर--

हिन्दी में पत्रादि के उत्तर केन्द्रीय सरकार के कार्यालय से हिन्दी में दिए जाएंगे ।

नियम-6 हिन्दी और अंग्रेजी दोनों का प्रयोग-

अधिनियम की धारा 3 की उपधारा (3) में निर्दिष्ट सभी दस्तावेजों के लिए हिन्दी और अंग्रेजी दोनों का प्रयोग किया जाएगा और ऐसे दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने वाले व्यक्तियों का यह उत्तरदायित्व होगा कि वे यह सुनिश्चित कर लें कि ऐसी दस्तावेजें हिन्दी और अंग्रेजी दोनों ही में तैयार की जाती हैं, निष्पादित की जाती हैं और जारी की जाती हैं।

नियम 9 : हिन्दी में प्रवीणता-

यदि किसी कर्मचारी ने-

मैट्रिक परीक्षा या उसकी समतुल्य या उससे उच्चतर कोई परीक्षा हिन्दी के माध्यम से उत्तीर्ण कर ली

है या स्नातक परीक्षा में अथवा स्नातक परीक्षा की समतुल्य या उससे उच्चतर किसी अन्य परीक्षा में

हिन्दी को एक वैकल्पिक विषय के रूप में लिया हो; या

यदि वह इन नियमों से उपाबद्ध प्ररूप में यह घोषणा करता है कि उसे हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त है तो उसके बारे में यह समझा जाएगा कि उसने हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त कर ली है ।

नियम 10 : हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान-

यदि किसी कर्मचारी ने-

मैट्रिक परीक्षा या उसकी समतुल्य या उससे उच्चतर परीक्षा हिन्दी विषय के साथ उत्तीर्ण कर ली है; या केन्द्रीय सरकार की हिन्दी परीक्षा योजना के अन्तर्गत आयोजित प्राज्ञ परीक्षा या यदि उस सरकार द्वारा किसी विशिष्ट प्रवर्ग के पदों के सम्बन्ध में उस योजना के अन्तर्गत कोई निम्नतर परीक्षा विनिर्दिष्ट है, वह परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है या केन्द्रीय सरकार द्वारा उस निमित्त विनिर्दिष्ट कोई अन्य परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है; या

यदि वह इन नियमों से उपाबद्ध प्ररूप में यह घोषणा करता है कि उसने ऐसा ज्ञान प्राप्त कर लिया है;

तो उसके बारे में यह समझा जाएगा कि उसने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है।

यदि केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में कार्य करने वाले कर्मचारियों में से अस्सी प्रतिशत ने हिन्दी का ऐसा ज्ञान प्राप्त कर लिया है तो उस कार्यालय के कर्मचारियों के बारे में सामान्यतया यह समझा जाएगा कि उन्होंने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है।

नियम 11 : मैनुअल, संहिताएं, प्रक्रिया संबंधी अन्य साहित्य, लेखन सामग्री आदि-

=> केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों से संबंधित सभी मैनुअल, संहिताएं और प्रक्रिया संबंधी अन्य साहित्य, हिन्दी और अंग्रेजी में द्विभाषिक रूप में यथास्थिति, मुद्रित या साइक्लोस्टाइल किया जाएगा और प्रकाशित किया जाएगा।

=> केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में प्रयोग किए जाने वाले रजिस्टरों के प्ररूप और शीर्षक हिन्दी और अंग्रेजी में होंगे।

=> केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में प्रयोग के लिए सभी नामपट्ट, सूचना पट्ट, पत्रशीर्ष और लिफाफों पर उत्कीर्ण लेख तथा लेखन सामग्री की अन्य मदें हिन्दी और अंग्रेजी में लिखी जाएंगी, मुद्रित या उत्कीर्ण होंगी;

परन्तु यदि केन्द्रीय सरकार ऐसा करना आवश्यक समझती है तो वह, साधारण या विशेष आदेश द्वारा, केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय को इस नियम के सभी या किन्हीं उपबन्धों से छूट दे सकती है।

नियम 12 : अनुपालन का उत्तरदायित्व-

केन्द्रीय सरकार के प्रत्येक कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान का यह उत्तरदायित्व होगा कि वह--

यह सुनिश्चित करे कि अधिनियम और इन नियमों के उपबंधों और उपनियम (2) के अधीन जारी किए गए निदेशों का समुचित रूप से अनुपालन हो रहा है औरइस प्रयोजन के लिए उपयुक्त और प्रभावकारी जांच के लिए उपाय करे ।

महत्वपूर्ण कार्यालय ज्ञापन

कार्यालय ज्ञापन संख्या- 31011/3/2018-स्था.(क-IV) दिनांक 20 जून, 2019

विषय- केंद्रीय सिविल सेवाएं (छुट्टी यात्रा रियायत) नियम 1988- हवाई यात्रा द्वारा उत्तर पूर्व क्षेत्र, जम्मू और कश्मीर तथा अंडमान और निकोबार के भ्रमण में छूट के स्पष्टीकरण के संबंध में।

विशेष सुविधा स्कीम के अंतर्गत किसी गैर-हकदार सरकारी कर्मचारी द्वारा अपने मुख्यालय से उत्तर-पूर्व क्षेत्र(एनईआर)/जम्मू और कश्मीर(जे ऐंड के)/अंडमान और निकोबार(ए ऐंड एन) में किसी गंतव्य की सीधी हवाई यात्रा किए किए जाने के मामले में हवाई यात्रा की विशेष सुविधा स्कीम के अंतर्गत उनकी रेल और हवाई यात्रा हकदारी के अनुसार निम्नवत विनियमित किया जाए: -

भ्रमण के स्थान (एनईआर/ जे ऐंड के/ ए ऐंड एन) के आधार पर मुख्यालय/तैनाती के स्थान सबसे निकट संगत रेलवे स्टेशन (अर्थात कोलकाता/गुवाहटी/चेन्नई/विशाखापत्तनम/दिल्ली/अमृतसर) तक अधिकृत श्रेणी का रेल किराया + समान रेलवे स्टेशन से भ्रमण के स्थान तक एलटीसी-80 इकोनॉमी श्रेणी हवाई किराया ; अथवा मुख्यालय से भ्रमण के स्थान तक वास्तविक हवाई किराया, जो भी कम हो।

पदोन्नति

श्री कैलास प्रजापति, आंकडा प्रविष्टि प्रचालक एस.ए.एस. परीक्षा के माध्यम से पदोन्नत होकर सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी के रुप में कार्यभार ग्रहण किए।

सेवानिवृत्ति

सेवानिवृत्ति

श्री अरूण देखणे, वरिष्ठ लेखापरीक्षक तथा श्रीमती ए.आई. लतीफ़ी वरिष्ठ लेखापरीक्षक

अपना सेवा काल पूर्ण करने के पश्चात दिनांक 31/05/2019 को सेवानिवृत्त हुए।

कार्यालय में आयोजित हिंदी कार्यशाला के प्रतिभागी

कार्यालय के मनोरंजन क्लब द्वारा आयोजित पिकनिक

कार्यालय के मनोरंजन क्लब द्वारा आयोजित चिकित्सा शिविर

कार्यालय प्रधान निदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा तथा पदेन सदस्य लेखापरीक्षा बोर्ड-2 मुंबई तथा हिंदुस्तान पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड द्वारा संयुक्त रुप से आयोजित खेल दिवस

between
AM HPCL & TEAM GOVERNMENT AUD

कार्यालय के मनोरंजन क्लब द्वारा आयोजित विभिन्न कार्यक्रम

महिला दिवस

महिला दिवस

नवरात्री

दीपावली

होली

कार्यालय के खेल वर्ग के कार्मिकों की उपलब्धियां

श्री ब्रविश शेट्टी, वरिष्ठ लेखापरीक्षक को लक्ष्य चैम्पियंस ट्रॉफी के फाइनल मैच में मैन ऑफ द मैच

श्री आकाश गुप्ता को आल इंडिया इंवाइटेशनल टेबल टेनिस टुर्नामेंट में स्वर्ण एवं रजत पदक प्राप्त करने पर कार्यालय द्वारा सम्मानित किया गया।

राजभाषा हिंदी में उत्कृष्ट कार्य हेतु लेखापरीक्षा दलों को प्रशंसा पत्र